संपादक परिचय

डॉ. अनिल पाटील

शिक्षा : एम.एससी., पीएच.डी.

प्रधानाचार्य : श्रीमती आक्काताई रामगोंडा पाटील कन्या महाविद्यालय, इचलकरंजी, जिला- कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

अध्यापन अनुभव : 31 वर्ष

प्रा. सुधाकर इंडी

शिक्षा : एम.ए. (हिंदी), नेट/सेट, एम.ए. (संस्कृत)

प्रस्तुत अध्यापन : श्रीमती आक्काताई रामगोंडा पाटील कन्या महाविद्यालय, इचलकरंजी, जिला- कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

अध्यापन अनुभव : 10 वर्ष

A S

ए.बी.एस. पब्लिकेशन

आशापुर, सारनाथ, वाराणसी-221 007

Ph. : (+91) 9450540654, 8669132434

E-mail : abspublication@gmail.com

/ AbsPublication

ISBN : 978-93-86077-89-9

9 789386 077899 >

₹1200/-

आधुनिक हिंदी कविता के विविध आयाम ■ संपादक : डॉ. अनिल पाटील, प्रा. सुधाकर इंडी

A S

आधुनिक हिंदी कविता के विविध आयाम

- जनवादी कविता
- भूमंडलीकरण की कविता

संपादक : डॉ. अनिल पाटील
प्रा. सुधाकर इंडी

Scanned by CamScanner

प्रकाशक
ए.बी.एस. पब्लिकेशन
आशापुर, सारनाथ
वाराणसी–221 007 (उ०प्र०)
मो० 09450540654, 08669132434

*

ISBN : 978-93-86077-89-9

*

© संपादक

*

प्रथम संस्करण : 2019

*

मूल्य : 1200/–

*

शब्द संयोजन :
रुद्र ग्राफिक्स

*

मुद्रक :
पूजा प्रिण्टर्स
बसंत विहार, नौबस्ता

Aadhunik Hindi Kavita Ke Vividh Ayaam
***Editer :* Dr. Anil Patil, Prof. Sudhakar Indi**
Price : One Thousand Two Hundred Only.

समर्पण

शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे जी
के जन्मशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में
उन्हें सादर समर्पित...

प्रा. धनंजय शिवराम घुटुकडे

Scanned by CamScanner

अनुक्रम

जनवादी कविता

1.	साठोत्तरी हिंदी कविताओं में सामाजिक विमर्श **डॉ. भास्कर उमराव भवर**	15
2.	जनवादी चेतना के कवि : डॉ. चंद्रकान्त देवाताले **प्रा. डॉ. गजानन भोसले**	19
3.	जनवादी कविता (साठोत्तरी युग) **प्रा. निलम भोसले**	24
4.	जनवादी कवि 'धूमिल' के काव्य में राजनीतिक व्यंग्य **प्रा. संगीता विष्णु भोसले**	31
5.	'सदियों का संताप' में चित्रित दलित जीवन की त्रासदी 'ठाकुर का कुआँ' **डॉ. देवीदास बोर्डे**	36
6.	नागार्जुन के काव्य में व्यंग्य **डॉ. साईनाथ विट्ठल चपळे**	44
7.	जनवादी कवि नागार्जुन : 'तुमने कहा था' कविता के सन्दर्भ में..... **प्रा. नंदू चव्हाण**	48
8.	मानवता मुक्ति का रौद्र स्वर **डॉ. सुनिल महादेव चव्हाण**	51
9.	नयी कविता के प्रतिमान **प्रा. डॉ. शिवाजी उत्तम चवरे**	58
10.	आधुनिक हिंदी कविता के विविध आयाम जनवादी कविता के विशेष संदर्भ में... **प्रा. डॉ. प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर,**	62
11.	जनमानस का व्यंग्य चित्रित करने वाले कवि नागार्जुन **प्रा. डॉ. संजय चोपड़े**	68
12.	जनकवि नागार्जुन एक संक्षिप्त मूल्यांकन **प्रा. नरेंद्र संदीपान फडतरे**	72
13.	धूमिल की जनवादी कविता **प्रा. डॉ. सुचिता जगन्नाथ गायकवाड**	76
14.	डॉ. सुशीला टाकभौरे की प्रतिनिधि कविताओं में स्त्रीवादी चेतना **श्री. अनिल सदाशिव करेकांबळे** **प्रा. धनंजय शिवराम घुटुकडे**	82

Scanned by CamScanner

15. नागार्जुन के काव्य में यथार्थ एवं लोकदृष्टि — 86
प्रा. डॉ.बालाजी बळीराम गरड

16. सुरेंद्र रघुवंशी की कविता में जनवादी चेतना — 90
डॉ. चित्रा मिलिंद गोस्वामी

17. नागार्जुन : जनवादी काव्य एवं स्वरूप — 93
पुष्पलता विट्ठलराव काळे

18. जनआंदोलन के कवि निराला — 96
प्रा. डॉ. अशोक बळी कांबळे

19. केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में जनवादी चेतना — 99
सचिन मधुकर कांबळे

20. हिंदी काव्य में जनवादी चेतना — 103
प्रा. सुवर्णा नरसू कांबळे

21. निर्मल गर्ग की कविता में नारी मन का चित्रण — 107
(पुत्रमोह कविता के संदर्भ में)
डॉ. रंजना आप्पासाहेब कमलाकर

22. मधुर शास्त्री की 'तदर्थ' काव्यसंग्रह में चित्रित जनवादी विचार — 110
प्रा. डॉ. हेमलता वि. काटे

23. जनवादी कविता में चेतना — 116
डॉ. भारत श्रीमंत खिलारे

24. 'पहाड़ पर लालटेन' काव्य–संग्रह में चित्रित शोषण के विभिन्न आयाम — 121
डॉ. संदीप जोतीराम किर्दत

25. आधुनिक हिन्दी कविता : एक सर्वेक्षण — 128
डॉ. कुलदीप कौर

26. सर्वेश्वर के काव्य में जनवादी चेतना — 133
डॉ. संतोष माने

27. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के काव्य में युग–यथार्थ — 137
प्रा. सविता शिवलिंग मेनकुदळे

28. नागार्जुन की कविता में सामाजिक एवं राजनीतिक जनचेतना — 140
('युगधारा' काव्य–संग्रह के विशेष संदर्भ में)
डॉ. एम. आर. मुंडकर

29. आधुनिक हिंदी कविता में जनवादी चेतना — 145
प्रा. शुभांगी शंकर निकम

30. चंद्रकांत देवतालेजी की कविताओं में मध्यवर्गीय जीवन की त्रासदी — 151
प्रा. जे. ए. पाटील

31. साठोत्तरी कविता में राजनीतिक चेतना — 156
प्रा श्रीमती माधुरी शिवाजीराव पाटील

32. साठोत्तरी कविता में जनवादी चेतना — 162
प्रा. संजय नारायण पाटील

33. जनवादी कवि श्मशेर बहादुर सिंह — 168
प्रा. संजीवनी पाटील

34. जनवादी कवि सुदामा पांडे 'धूमिल' — 173
प्रा. डॉ. सरोज पाटील

35. केदारनाथ सिंह के समकालीन कविता में भावाभिव्यक्ति — 179
(यहाँ से देखो, अकाल में सारस के संदर्भ में)
प्रा. डॉ. विजया जगन्नाथ पिंजारी

36. जनवादी कवि गजानन माधव मुक्तिबोध — 184
डॉ. वर्षाराणी निवृत्तिराव सहदेव

37. कवि धूमिल की स्वानुभूत जनवादी चेतना — 188
डॉ. बबन साळपुते

38. मुक्तिबोध की कविता 'अंधेरे में' जनवादी चेतना — 194
डॉ. सत्यनारायण एच.के.

39. मुक्तिबोध के काव्य में मानववाद — 198
डॉ. मोहन सावंत

40. चंद्रकांत देवताले की कविताओं में जनवादी चेतना — 203
डॉ. नाजिम शेख

41. धूमिल के काव्य में सामाजिक (जनवादी) भावबोध — 207
डॉ. वैशाली सुनील शिंदे

42. 'जंगल पहाड़ के पाठ' पढ़ाती आज की आदिम कविता — 211
डॉ. शशिकांत सोनवणे 'सावन'

43. दिनकर के काव्य में नवचेतना — 216
प्रा. डॉ. रशीद तहसिलदार

44. साठोत्तरी हिंदी कविता में सामाजिक चेतना — 219
प्रा. शैलजा पांडुरंग टिळे

45. जनसरोकार की प्रखर अभिव्यक्ति: बाबा नागार्जुन — 224
डॉ. दीपक रामा तुपे

46. अरुण कमल के काव्य में जनवादी चेतना और श्रमसाध्य यथार्थ — 229
डॉ. राहुल उठवाल

47. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के काव्य में जनमानस के लिये संवेदना का भाव — 236
डॉ. सुमन लता वर्मा

Scanned by CamScanner

45

जनसरोकार की प्रखर अभिव्यक्ति: बाबा नागार्जुन

डॉ. दीपक रामा तुपे

जिनकी कविताओं के तेवर विद्रोही और जनसरोकारों से संबंधित रहे, जिन्होंने आम आदमी के बीच बैठकर उनकी पीड़ा को महसूस किया, उनकी व्यथा को जिया, वे जनता के, जनता के लिए एवं जनता के दुःख–दर्द तथा उनकी संवेदनाओं के कवि रहें। सीधा कथन, धारदार शब्द, स्पष्ट विचार करने वाले जिंदादिल व्यक्तित्व का नाम है–बाबा नागार्जुन। वे सच्चे अर्थों में जनकवि थे। नागार्जुन का सचेत और अचेत भावबोध हमेशा जनता के साथ अभिन्न रूप से जुड़ा रहा। जनता के जीवन को कष्टमय और कलहपूर्ण बनाने वाली हर चीज बाबा नागार्जुन के घृणा का पात्र रही। यह घृणा काफी प्रचंड होती थी। पूँजीपति की शोषणकारी लीलाएँ अथवा धर्म के ध्वजाधारियों की स्वार्थपरता इन तमाम विषयों पर नागार्जुन ने व्यंग्यबाण छोड़े। नागार्जुन अपने कवि–जीवन के प्रारंभ से अंत तक जनता से जुड़ रहें, जनता के बनकर रहें, जनशक्ति के उपासक रहें और जनता के लिए कविता लिखते रहें। वे मानव संवेदना को अपनी कविता के माध्यम से सींचते रहें। कवि की भूमिका का निर्वहन करते हुए उन्होंने जो सन् 1965 ई. में कहा था, उसे मानों हम आज भी साकार कर रहे हों–

"जनता मुझसे पूँछ रही हैं क्या बतालाऊं
जनकवी हूँ मैं साफ कहूँगा क्यों हकलाऊं।"

जनकवि बाबा नागार्जुन की ये पंक्तियाँ उनके जीवन दर्शन, व्यक्तित्व एवं साहित्य का दर्पण है। अपने समय की हर महत्वपूर्ण घटना पर तेज तर्रार कविताएँ लिखने वाले क्रांतिकारी कवि बाबा नागार्जुन एक ऐसी हरफनमौला शख्सीयत थे, जिन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं तथा कई भाषाओं में लेखन कर्म के साथ–साथ जनआंदोलन में भी बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया और उनका नेतृत्व भी किया। सन् 1974 ई. में प्रकाशित 'अन्न पचीसी के दोहे' में जनआंदोलन की गुहार दिखाई देती है–

"कबिरा खड़ा बाजार में, लिए लुकाठी हाथ
बंदा क्या घबराएगा, जनता देगी साथ
छीन सके तो छीन ले, लूट सके तो लूट
मिल सकती कैसे भला, अन्न चोर को छूट।"

कवि नागार्जुन ने जहाँ कहीं अन्याय देखा, जन–विरोधी चरित्र की छद्मलीला देखी, उन सबका जमकर विरोध किया, उन पर तीव्र प्रहार किया। शोषण की व्यवस्था का उन्होंने हमेशा विरोध जताया। सत्तर के दशक में पश्चिम राजनीति की सरकारी तांडवलीला सन् 1966 ई. में वे 'शासन की बंदूक' कविता में रेखांकित करते हैं। कवि नागार्जुन इस कविता में तत्कालीन राजनीति का मुखौटा जनता के सामने बेबाकी के साथ खोलते हैं–

"सत्य स्वयं घायल हुआ, गई अहिंसा चूक
जहाँ–तहाँ दगने लगी, शासन की बंदूक
जली ठूँठ पर बैठकर गई कोकिला कूक
बाल न बाँका कर सकी शासन की बंदूक।"

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान जनता को रामराज्य का सपना दिखाया गया। राजनीतिक आजादी मिल गई। रामराज्य के सपने, सपने ही बने रहें। फलस्वरूप भारतीयों को हताशा एवं निराशा का सामना करना पड़ा। भारतीय जन–जीवन में जीने वाले कवि नागार्जुन ने भी इसे विराध किया। निराला ने नेहरू पर व्यंग्यात्मक शैली में कविता लिखी थी। पर नागार्जुन ने नेहरू पर जिस चुटील अंदाज में कविता लिखी वह अन्यत्र दुर्लभ है। ब्रिटेन की महारानी के भारत आगमन को नागार्जुन ने देश का अपमान समझा और 'आओ रानी' कविता में लिखा–

"आओ रानी, हम ढोयेंगे पालकी,
यही हुई है राय जवाहरलाल की
रफू करेंगे फटे–पुराने जाल की
यही है राय जवाहरलाल की
आओ रानी, हम ढोयेंगे पालकी!
+++++
सैनिक तुम्हें सलामी देंगे
लोग–बाग बलि–बलि जायेंगे
दृग–दृग में खुशियाँ छलकेगी
ओसों में दूबें झलकेंगी
ओसों में दूबें झलकेगी
प्रणति मिलेगी नये राष्ट्र के भाल की
आओ रानी, हम ढोयेंगे पालकी!

उक्त पंक्तियों के माध्यम से बाबा नागार्जुन इंग्लैंड की रानी और जवाहरलाल की साँठ–गाँठ उजागर करते हैं। लोग–बाग बलि जाएंगे, नए राष्ट्र के भाल की

Scanned by CamScanner

प्रणति मिलेगी फिर भी सैनिक तुम्हें सलामी देंगे। कवि नागार्जुन ने ब्रिटेन तथा अमेरिका जैसी महाशक्तियों का विरोध उस समय निर्द्वंद्व भाव से किया है जब देश के कर्णधार एवं तथाकथित बुद्धिजीवी आशाभरी नजर से 'प्ले बॉयज' की भूमिका अदा करते थे। नागार्जुन के इस विरोध तथा व्यंग्यात्मक भाव ने हिंदी कविता को नई गति दी। उन्होंने अमेरिकी साम्राज्यवाद पर करारा प्रहार करते हुए लिखा है– 'जाओ, भस्मासुरी नृत्य का कहीं और ही करो रिहर्सल।'

नेशनल इमरजेंसी के दौर में कवि बाबा नागार्जुन ने इंदिरा गांधी की आपातकालीन घोषणा की तीव्र निंदा की, स्वैराचार का विरोध किया। इंदिरा जी को बाघिन कहने में उन्हें कोई हिचक न हुई। नागार्जुन ने इंदिरा गांधी की दमनकारी नीतियों का विरोध किया। सत्तर की दशक में आपतकाल लागू कर दिया गया। किसी को गिरफ्तार किया जाने लगा, अखबारों को नियंत्रित किया गया। अपने विरोधियों एवं प्रतिद्वंद्वियों को इंदिराजी जिस ताकत से अंजाम दे रही थी। उसे देखकर प्रतिद्वंद्वियों की चिंगारियाँ सुगबुगाने लगी। वही दूसरी तरफ बाबा नागार्जुन जैसे फक्कड़ कबीर के वंशज सीधे–सीधे अभिधा में कहने से नहीं डरते थे–

"क्या हुआ आपको? क्या हुआ आपको?
सत्ता की मस्ती में भूल गई बाप को?
घ्इंदु जी इंदु जी क्या हुआ आपको?
बेटे को तार दिया, बोर दिया बाप को
क्या हुआ आपको? क्या हुआ आपको?
आपकी चाल–ढाल देख–देख लोग हैं दंग
हकूमती नशे का वाह–वाह कैसा चढ़ा रंग
सच–सच बताओ भी क्या हुआ आपको
यों भला भूल गई बाप को!
छात्रों के लहू चस्का लगा आपको
काले चिकने माल का मस्का लगा आपको
किसी ने टोका तो ठस्का लगा आपको
घ्इंदु जी इंदु जी क्या हुआ आपको?"

बहरहाल, राजनीति और समाज पर बाबा की चोट जारी रही। वे भारतीय लोकतंत्र से गिरती साख से दुःखी रहने लगे। भारतीय लोकतंत्र के खोखलेपन से खिन्न जरूर रहें, लेकिन उन्होंने आशा का दामन नहीं छोड़ा था। इन सबके बीच अंधेरे में आशा का एक जुगनू भी प्रकाशित होता तो बाबा के अंदर की शिशुता उत्साह में बदल जाती। सन् 1966 ई. में जब बिहार में अकाल की परिस्थिति रही जब परिस्थिति सामान्य होने की पहली किरण दिखाई देते ही बाबा के घर के अंदर की विभीषिका 'अकाल और उसके बाद' कविता में अभिव्यक्त हुई नजर आती है।

कई दिनों तक चूल्हा रोया चक्की रही उदास,
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उसके पास

कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त,
कही दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।

दुभार्ग्य से सत्ता में अधिपति बन गए, मगर परिस्थितियाँ वैसी की वैसी रह गई। बाबा नागार्जुन शासन–प्रशासन की हर गलत नीति का सीधे–सीधे प्रहार करते थे। जनता से जो लिया वह उन्होंने कविता के माध्यम से जनता को दिया। बाबा जनता की आवाज थे। संसद से सड़क के बीच एक गहरी खाई आई थी, बाबा ने इस खाई को जनता की आवाज समझकर शब्दबद्ध किया। बाबा एक समय पंडित नेहरू के भी समर्थक रहें। नेहरू की नीति से खिन्न एवं कूपित हुए तो जनता की जज्बात इन शब्दों में करते हैं–

"वतन बेच कर पंडित/नेहरू फुले नहीं समाते हैं
बेशर्मी की हद है फिर भी
बातें बड़ी बनाते हैं
अंग्रेजी–अमरीकी जोंकों
की जमात में हैं शामिल
फिर भी बापू की समाधि
पर झुक–झुक फूले नहीं समाते हैं।"

स्पष्ट है कि हर नए सत्ता परिवर्तन के साथ बाबा नागार्जुन उनके साथ जरूर रहें, लेकिन उन्होंने उनकी जनविरोधी नीति के साथ कभी समझौता नहीं किया। हमारे यहाँ रोजी–रोटी की बात करने वाल हमेशा कम्यूनिस्ट कहलता है। श्रीमान मजदूर एवं किसानों का गला रेतकर माल पा लेते हैं। इसलिए कवि कहता है कि सपने में भी सच मत बोलना क्योंकि पकड़े जाओंगे। इसलिए बाबा गरीबी, भूख, कुशासन और भ्रष्टाचार के खिलाफ लगातार आवाज उठाते रहें–

"रोजी रोटी, हक की बातें जो भी मुँह पर लाएगा,
कोई भी हो, निश्चय ही वह कम्यूनिस्ट कहलाएगा!
नेहरू चाहे जिन्ना, उसको माफ करेंगे कभी नहीं,
जेलों में ही जगह मिलेगी, जाएगा वह जहाँ कहीं!
सपने में भी सच न बोलना, वर्ना पकड़े जाओगे,
भैया, लखनऊ–दिल्ली पहुँचो, मेवा–मिसरी पाओगे!
माल मिलेगा रेत सको यदि गला मजूर–किसानों का,
हम मर भुक्खों से क्या होगा, चरण गहो श्रीमानों का!"

स्पष्ट है कि हमारे यहाँ रोजी–रोटी की बात करने वालों या सच बोलने वालों को जेलों में जगह मिलती है, इसमें किसी को माफ नहीं किया जाता। दिल्ली–लखनऊ में मेवा–मिसरी मिलती है और मजदूर–किसानों का माल भी मिलता है। सामान्य आदमी भूखा मर रहा है, उन्हें श्रीमानों के चरण पकड़ने के अलावा कोई चारा नहीं है। वे सजग, संवेदनशील कवि थे। उनके हर पहलू में बेबाकी और सच्चाई साफ झलकती थी। बाबा नागार्जुन की बेबाकी ऐसी कि उन्होंने गांधी पर भी टिप्पणी करने में कभी हिचक महसूस नहीं की।

Scanned by CamScanner

"बापू के भी ताऊ निकले तीनों बंदर बापू के!
सरल सूत्र उलझाऊ निकले तीनों बंदर बापू के!
सचमुच जीवनदानी निकले तीनों बंदर बापू के!
ज्ञानी निकले, ध्यानी निकले तीनों बंदर बापू के!
जल–थल–गगन–विहारी निकले तीनों बंदर बापू के!
लीला के गिरधारी निकले तीनों बंदर बापू के!"

स्पष्ट है कि नागार्जुन ने हमेशा सामाजिक न्याय का सपना देखा। उन्होंने बापू के बंदरों की भी आलोचना की। कवि बापू के बंदर में आए हुए परिवर्तन को बेबाकी के साथ रेखांकित करते हैं। बापू के बंदर गिरीधारी, जल–थल–गगन के विहारी, ज्ञानी, ध्यानी, जीवनदानी निकले। आज बापू के बंदर हर रूप का समाज के सामने आया, जिसे कवि ने उक्त काव्य के माध्यम से अभिव्यक्त किया।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि नागार्जुन की प्रतिबद्धता किसी राजनीतिक पार्टी के साथ नहीं थी बल्कि जनता के साथ थी, इसी कारण उन्हें जनकवि कहा जाता है। उनकी चेतना दबे–कुचले लोगों के प्रति, उनके जीवन की बेहतरी के प्रति रही। उन्होंने जन–विरोधी चरित्र की छद्मलीला का जमकर विरोध किया। जनता का रामराज्य का सपना, सपना ही रहा, इसलिए उन्होंने चुटील अंदाज व्यवस्था का विरोध किया। बाबा नागार्जुन इंग्लैंड की रानी और जवाहरलाल की साँठ–गाँठ व्यंग्यात्मक शैली में उजागर करते हैं। भारतीय लोकतंत्र के खोखलेपन से वे खिन्न जरूर रहें, लेकिन उन्होंने आशा का दामन नहीं छोड़ा। हर नए सत्ता परिवर्तन के साथ बाबा उनके साथ रहें, लेकिन उन्होंने जनविरोधी नीति के साथ कभी समझौता नहीं किया। रोजी–रोटी की बात करने में उन्होंने कभी हिचकिचाहट महसूस नहीं की। वे कई बार जेल में गए लेकिन जनता की सच बात बोलने में कभी कसर नहीं छोड़ी।

संदर्भ

1. https://www.youtube.com/¡tch\v¾bq7nO9i&8A-
2. https://www.amarujala.com.
3. www.abpnews.in.
4. www.kavitakosh.org.
5. www.bharatdashan.co.nz.
6. https://www.youtube.com¡tch
7. https://hindi-sakshi-com/editors-picks/2018/06/30/baba&nagarjun-birth-anniversary.

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
विवेकानंद कॉलेज (स्वायत्त), कोल्हापुर।
मोबाइलः 8805282610
ई–मेलः dipaktupe1980@gmail.com

46

अरुण कमल के काव्य में जनवादी चेतना और श्रमसाध्य यथार्थ

डॉ. राहुल उठवाल

चेतना – "चेतना" मनुष्य के मन की प्रमुख विशेषता है। अपने आस–पास के परिवेश की ओर देखने के मनुष्य के विशिष्ट दृष्टिकोन और घटित घटनाओं की स्वाभाविक प्रतिक्रिया को चेतना कहा जा सकता है। "चेतन मानस की प्रमुख विशेषता चेतना है, अर्थात् वस्तुओं, विषयों, व्यवहारों का ज्ञान। चेतना की प्रमुख विशेषताएँ हैं निरंतर परिवर्तनशीलता अथवा प्रवाह।"१इस प्रकार मनुष्य की अपने चेतस्–अचेतस् जगत् की ओर देखने की दृष्टि को चेतना कहा जाता है। मनुष्य अपनी इसी विशेषता के कारण अन्य सजीव प्राणी मात्रों से अलग पहचान रखता है। अपने विवेक और ज्ञान के बल पर उसमें चेतना आ गयी है। अन्य प्राणी मात्र सजीव होकर भी विवेक और ज्ञान के अभाव में अपनी अलग दृष्टि नहीं रख पाते।

जनवादी चेतना – जनवादी चेतना का अर्थ होता है समाज के सामान्य या सर्वहारा जनता के प्रति विशेष दृष्टिकोन। समाज में उत्पादन – साधनों के आधार पर समाज के एक विशिष्ट वर्ग द्वारा जनता का शोषण किया जाता है। ऐसी शोषणकारी–व्यवस्था का ध्वंस कर समतामूलक–व्यवस्था की स्थापना को जनवाद कहा जाता है। विशिष्ट पूँजीपति या धनिकों की सत्ता की जगह सामान्य – सर्वहारा जनता की सत्ता को भी जनवाद कहा जाता है। इसी दृष्टि से शोषणकारी, विषमतामूलक समाज–व्यवस्था को समाप्त कर समतामूलक, शोषणविरहित समाज की कामना को ही "जनवादी–चेतना" कहा जाता है। जनवादी चेतना अर्थात् सामान्य जनता के प्रति स्वातंत्र्य, समता एवं बंधुत्व का दृष्टिकोन है। उसी शोषण के अत्याचारी बंधनों से मुक्ति की उदात्त–भावना को "जनवादी–चेतना" कहा जाता है। मनुष्य के मन की इस चेतना के संबंध में डॉ. नरेन्द्र सिंह लिखते हैं– "अपने दृष्टिकोन के साथ सर्वहारा के विश्व – दृष्टिकोन को एकात्म करते हुए अपने समानधर्माओं के संपर्क के फलस्वरूप प्राप्ति ज्ञान का अपनी मुक्ति जैसे विशिष्ट उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किया जानेवाला सचेतन प्रयास जिसमें समाज के प्रति एक निश्चित (जनवादी) दृष्टिकोन अपनाया गया

Scanned by CamScanner